Regarding cooperative societies and cooperative banks

श्री देवजी पटेल (जालौर): सभापति महोदय, कोआपरेटिव के माध्यम से लोगों को बहुत लूटा जा रहा था, जिसका एक पुराना किस्सा महाराष्ट्र का भी आया । सेम आदर्श कोआपरेटिव बैंक हमारे राजस्थान में और पूरे भारत में है । कई लोगों का उन लोगों ने पैसा ले लिया और आज वे पैसे वापस नहीं लौटा रहे हैं । इसका एकमात्र कारण है कि उनकी प्रापर्टीज़ सीज हो गई हैं । सभी प्रापर्टीज़ को एक जगह पर लाकर, उसे बेचकर लिक्विडेटर को पैसा देंगे, तभी जाकर वह पैसा लोगों तक पहुंच पाएगा । कई लोगों ने पेट काटकर, अपनी बचत को वहां पर जमा किया । आदर्श के अंदर उनके सारे सपने डूब गए । हम पिछले बहुत समय से यह डिमांड कर रहे हैं कि आदर्श का पैसा उन लोगों को मिले, लेकिन लिक्विडेटर यह कह रहा है कि मेरे पास कुछ नहीं है । वह कह रहा है कि ऑफिस चलाने के लिए मेरे पास पैसे नहीं हैं ।

मैं आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध करूंगा कि आदर्श का पैसा दिलवाने के लिए जैसे सहारा का पोर्टल बनाया है, वैसे ही कोई भी एक सिस्टम बनाकर उन लोगों को पैसा मिले, ताकि जिनका पैसा आदर्श में डूबा है, वे बेचारे अपनी जान न गंवायें और अपने आप को बचा पाएं । मैं यह डिमांड कर रहा हूं ।